संस्कृत वाङ्मय चिन्तन

संपादक

डॉ० बाबूलाल मीना

एम०ए० संस्कृत लब्ध स्वर्ण पदक, पीएच०डी०, साहित्याचार्य

एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत

महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भरतपुर (राज०)

ईस्टर्न बुक लिंकर्स

दिल्ली : : (भारत)

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

1.10 योगोपनिषदों में योगतत्त्व चिंतन
डॉ० कलापिनी हरेकृष्ण अगस्ति 88

1.11 शिक्षाग्रन्थेषु भाषाशास्त्रीयविचारा:
डॉ० हरेकृष्ण: अगस्ति: 97

1.12 भाषा शिक्षण में शिक्षा वेदाङ्ग की उपादेयता
डॉ० भूपेन्द्र कुमार राठौर 103

द्वितीय अध्याय : आर्षकाव्य एवं पुराण विषयक चिन्तन

2.1 वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण
क्षमा 117

2.2 श्रीमद्भगवद्गीता के जीवन दर्शन का भारत के नव-निर्माण में योगदान
आचार्य (डॉ०) शीलक राम 124

2.3 तनावपूर्ण जीवन में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ० रामहेत गौतम 156

2.4 श्रीमद्भागवत के संवादों में वर्णितभक्ति का माहात्म्य
डॉ० आशा सिंह रावत, डॉ० कल्याण सिंह रावत 163

2.5 अग्निपुराण में राजधर्म की प्रासंगिकता
डॉ० संजय कुमार 174

2.6 श्रीमद्भागवत के उपदेशों में वर्णित भक्ति की महिमा
डॉ० आशा सिंह रावत 184

2.7 प्रमुख पुराणों में पर्यावरण चिन्तन
प्रो० रामेश्वर प्रसाद गुप्त 192

तृतीय अध्याय : नाट्य विषयक चिन्तन

3.1 संस्कृत नाट्य की अद्यतन प्रवृत्तियाँ
डॉ० मीरा द्विवेदी 203

3.2 संगीतकलामर्मज्ञ: कविकुलगुरु: कालिदास:
डॉ० सुकदेव वाजपेयी 219

3.3 उत्तररामचरितम् में योषिदलङ्कार
डॉ० नौनिहाल गौतम 225

Scanned with CamScanner

2.5

अग्निपुराण में राजधर्म की प्रासंगिकता

डॉ० संजय कुमार
सहायक आचार्य संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

प्रत्येक राष्ट्र को उन्नत तथा सुव्यवस्थित बनाये रखने के लिए राजधर्म की महती आवश्यकता होती है। राजधर्म सम्पूर्ण प्रजा, राजा एवं राज्य को धारण किये रहता है इसीलिए यह धर्म कहलाता है। संस्कृत वाङ्मय में राजधर्म के लिए दण्डनीति, नीतिशास्त्र, राजशास्त्र, क्षत्र विद्या तथा राजनीति आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। राजधर्म को शास्त्र के रूप में भी ग्रहण किया जाता है क्योंकि यह शास्त्र की तरह प्रभुसम्मित हुआ करता है। इसके कथन में किसी प्रकार के संशोधन अथवा परिवर्तन की सम्भावना नहीं होती है। यह तो अपने मूल स्वरूप का व्यवहार कराता है और लोक-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। अग्निपुराण में राजधर्म के विविध पक्षों पर मीमांसा की गयी है। जिससे प्रजा, राजा और राज्य केवल सुरक्षित ही नहीं रहते बल्कि उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहते हैं।

अग्निपुराण भारतीय वाङ्मय की अमूल्य निधि है। इसमें विविध विषयों का समावेश लोक मंगल की भावना से ही किया गया है। लोक मंगल की पुनीत भावना से ओत-प्रोत अग्निपुराण अपनी विश्व व्यापकता को प्रकाशित करता है। इसमें राजधर्म के साथ-साथ नाट्यशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, दर्शन, समाजशास्त्र आदि विषयों का व्यावहारिक पक्ष उद्घाटित है। इसलिए इसे ज्ञान परम्परा का कोश कहा जा सकता है।

राजधर्म में राजा का अत्यधिक महत्त्व होता है। राजा ही प्रजा का भाग्य विधाता होता है। जिस राज्य में राजा-प्रजा में किसी प्रकार का मतभेद नहीं होता है वही राज्य उन्नति करता है। इसलिए राजा का प्रथम कर्त्तव्य प्रजा का पालन करना है। इस विषय में पंचतन्त्र में ठीक ही कहा गया है-

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner